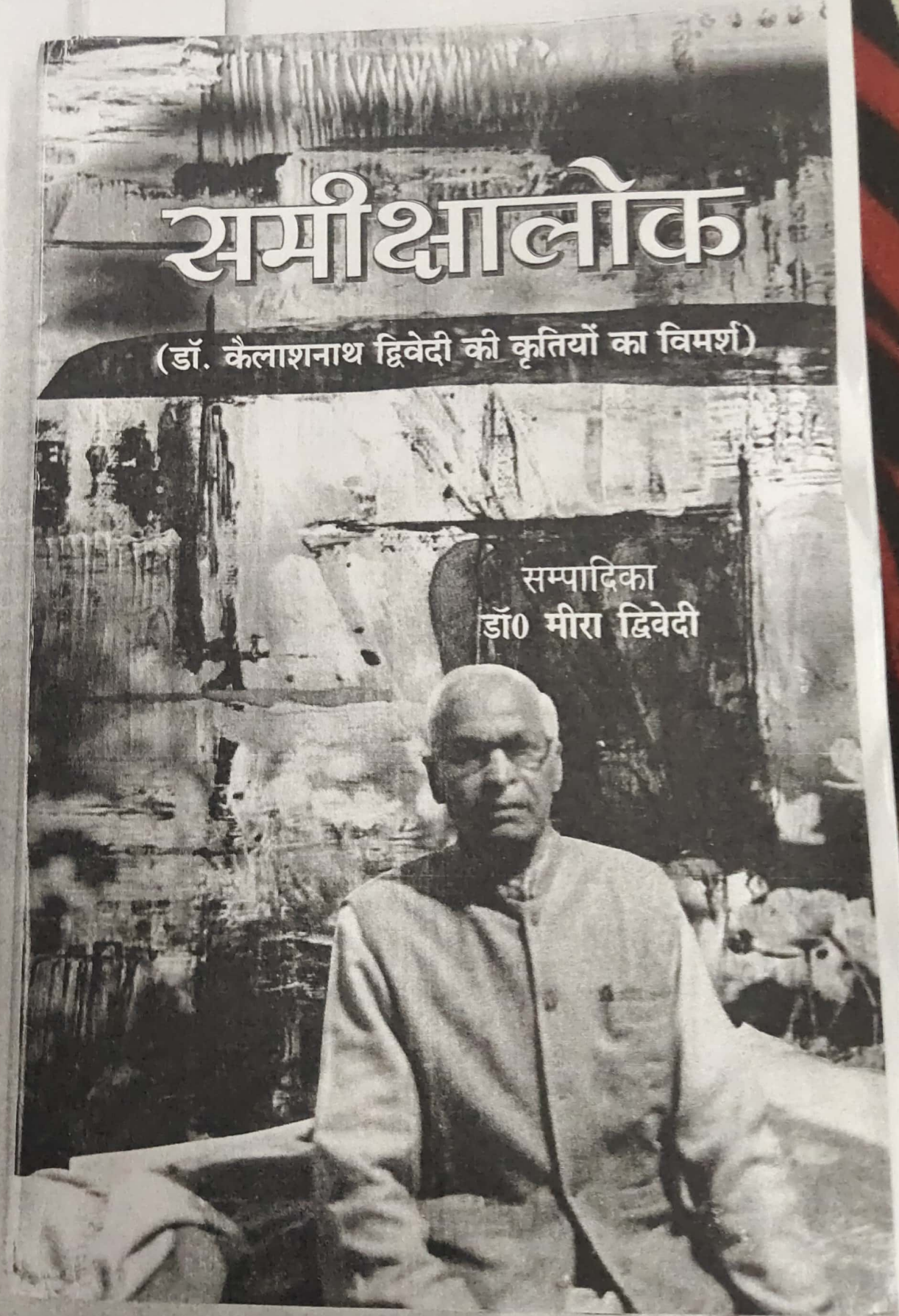

समीक्षालोक

(डॉ. कैलाशनाथ द्विवेदी की कृतियों का विमर्श)

सम्पादिका

डॉ0 मीरा द्विवेदी

Scanned with CamScanner

महामहोप
कैलाशनाथ
रचनात्मक औ
है। विद्यार्थी ज
हिन्दी भाषा
विविध प्रतिष्ठि
होती रही हैं।
रचे गये अ
राष्ट्रीयभावना,
जागरण की अ
से मुक्ति और
सुनाई पड़ता
परम्परागत चि
आपकी अवधा
हैं।

इनमें से व
शोधार्थियों ने
शोधकार्य कर श
समय-समय पर
शोधसमीक्षको
आलोचनात्मक दृ
अपनी पैनी समीक्ष
उद्घाटन किया है
पर अद्यावधि जो
उसे सुरभारती व
सुधीजनों के स
समीक्षालोक के मा
रहा है। आशा
शोधसमीक्षा ग्र
पाठकगण लाभानि
स्वागत अवश्य करें

प्रकाशक
सरस प्रकाशन
1586, संघीजी का रास्ता
एस.एम.एस. हाईवे
जयपुर 302 003

प्रथम संस्करण 2019
ISBN : 81-88766-03-8
मूल्य : 600/-
© सम्पादिका

टाइप सैटिंग
वी.एम. कम्प्यूटर्स
जयपुर

मुद्रक
शीतल ऑफसेट
जयपुर

Scanned with CamScanner

13

नाट्यामृतम् में अर्थोपक्षेपक

प्रो. अर्चना दुबे

आधुनिक संस्कृत साहित्य के शिरोभूषण कैलाशनाथ द्विवेदी द्वारा विरचित 'नाट्यामृतम्' नाट्यपरम्परा में अप्रतिम स्थान रखता है। 'नाट्यामृतम्' का आधुनिक संस्कृत साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। नाटककार ने नाट्यामृतम् में नाट्य के तत्वों का समुचित परिपालन किया है। अपनी मौलिक प्रतिभा के संस्पर्श से 'नाट्यामृतम्' में ऐतिहासिकता एवं नाट्यशास्त्रीय तत्त्वों का समावेश कर मणिकाञ्चन योगदान दिया है।

कैलाशनाथ द्विवेदी जी श्रेष्ठ कवि होने के साथ साथ प्रखर वक्ता भी हैं। आप अपने कमनीय नाट्य–कौशल एवं श्रवणीय पठन विद्या के कारण सहृदय जगत् के आकर्षणकेन्द्र हैं। उच्चारण की स्पष्टता, छन्द की मधुरता, व्यवहार की कुशलता, वक्तव्य की ओजस्विता, वैदुष्य की गम्भीरता आदि अनेक व्यक्तित्व के धनी एक मानक प्रतिमान के रूप में स्थापित हैं। इनकी अजस्र वाग्धारा इनके सारस्वत निर्झरत्व को सिद्ध करती है। प्राचीन व अर्वाचीन संस्कृत पद्धतियों में प्रवीण यशस्वी डॉ. कैलाशनाथ द्विवेदी जी का जन्म 11 जनवरी 1942 ई. में उत्तर प्रदेश के कानपुर देहात जनपद के अन्तर्गत वैनाग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम पंडित श्री सुदर्शन लाल द्विवेदी, एवं माता का नाम श्रीमती सुखरानी है। जनता महाविद्यालय अजीतमल में संस्कृत विभागाध्यक्ष एवं मथुराप्रसाद महाविद्यालय कोंच में प्राचार्य पद को विभूषित किया है। स्वनामधन्य डॉ. द्विवेदी प्रखर प्रतिभा के धनी हैं।

डॉ. कैलाशनाथ द्विवेदी को 1963 में आगरा विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश से कुलाधिपति पदक से सम्मानित किया गया। 1983, 1985, 1992, 1994, 1995 एवं 2002 ई. में उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी का विशिष्ट पुरस्कार प्राप्त हुआ। 1986 ई. में बिहार सरकार का डॉ. काशीप्रसाद जायसवाल पुरस्कार प्राप्त हुआ। 1995 ई0 में बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झांसी से श्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार प्राप्त हुआ। 2006 में हिन्दी विकास परिषद् विधुना एवं 2007 में हिन्दी प्रोत्साहन निधि औरेया से सम्मानित हुए। 2000 में विश्व हिन्दी सम्मेलन में सहस्राब्दी सम्मान प्राप्त हुआ तथा 1999, 2000, 2002, 2005, 2006, 2007, 2009 व 2010 में दिल्ली संस्कृत अकादमी के अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत किए गए हैं। 2009 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा "महामहोपाध्याय" उपाधि मिली। राष्ट्रीय स्तर की अनेक संस्कृत एवं हिन्दी पत्रिकाओं में उच्चतर रचनाएं प्रकाशित तथा आकाशवाणी के लखनऊ एवं छतरपुर

Scanned with CamScanner

केन्द्र से विविध विषयों पर काव्य वार्ता प्रसारित हुई। विविध काव्य–वार्तायें अन्यान्य आकाशवाणी केन्द्रों द्वारा प्रकाशित होते रहते हैं। द्विवेदी जी पण्डितों के बीच ऐसे सुशोभित हैं जैसे कि नक्षत्रों के बीच चन्द्रमा। विद्या–विनय की मूर्ति, सरल स्वभाव, वाग्मी, प्रखर वक्ता द्विवेदी जी की अनूठी विशेषताएँ हैं।

'शाकुन्तल–सौरभम्' द्विवेदी जी की कवि प्रतिभा का चरमोत्कर्ष है। काव्य, नाटक, शोधलेख संग्रह एवं समीक्षात्मक ग्रन्थ तथा कई टीकायें उपलबध हैं। गुरुमाहात्म्यशतकम्, शाकुन्तलीयम्, काव्यमाला ये पद्यकाव्य हैं तथा 'नाट्यामृतम्' नाट्य है। लेखांजलि व कालिदास एवं भवभूति के नारीपात्र शोधलेख व समीक्षा सम्बन्धी ग्रन्थ हैं। इनके कृतित्व में काव्यमाला ग्रन्थ बहुत ही सुन्दर छन्दों से युक्त है, जिसमें सरस्वती–वन्दना, विष्णु–वन्दना एवं गुरु–वन्दना, राष्ट्र का स्तवन, रमणीय भावना, विवेकानन्द–प्रशस्ति, पोखरण में परमाणु परीक्षण इत्यादि का वर्णन किया है।

डॉ. कैलाशनाथ द्विवेदी के "नाट्यामृतम्" में पाँच रूपकों का संग्रह है–(1) अलक्षेन्द्रविजयम्, (2) विजेता कः, (3) विजिगीषोर्विवशता, (4) वसुमित्रविजयम् तथा (5) प्रतिशोधः।

इन सभी रूपकों में "विजेता कः" नामक रूपक सर्वश्रेष्ठ रूपक है। इसकी कथावस्तु अतिरोचक है तथा रंगमंच पर अभिनेय के योग्य है। इसके सभी दृश्य व घटनाएँ रंगमंच पर सुन्दर अभिनय के योग्य हैं। अतः रंगमंच पर इसका अभिनय करके इसको और अधिक रोचक बनाया जा सकता है।

सूच्यवस्तु –जिन घटनाओं की रंगमंच पर सूचना मात्र दी जाती है, उन्हें सूच्य कहते हैं। सूच्य इतिवृत्त की सूचना के जो उपाय है उन्हें अर्थोपक्षेपक कहते हैं–

अंकेष्वदर्शनीया या वक्तव्यैव च सम्मता,
या च स्याद्वर्षपर्यन्ता कथा दिनद्वयादिजा।
अन्या च विस्तरा सूच्या सार्थोपक्षेपकैर्बुधैः।।

अर्थोपक्षेपक पाँच प्रकार के हैं–

अर्थोपक्षेपकाः पंच विष्कम्भकप्रवेशकौ।
चूलिकाऽकांवतारोऽथ स्यादंकमुखमित्यपि।।

अर्थात् विष्कम्भक, प्रवेशक, चूलिका, अंकावतार और अंकमुख।

वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः।
संक्षिप्तार्थस्तु विष्कम्भ आदावंकस्य दर्शितः।।[4]

विष्कम्भक–

विष्कम्भक अंकसंधायक (अंक का संसूचक) हुआ करता है अर्थात् यह दो अंकों का संबंध कराने वाला होता है। "विष्कम्भनासि अनुसंधानेन वृत्तमुपष्टम्भयतीति विष्कम्भकः।" यह रूपक में घटित घटनाओं अथवा भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं

Scanned with CamScanner

(वृत्तांशों) का वह सूचक उपाय है जिससे मध्यम पात्रों द्वारा संक्षेपतः कथांशों की सूचना दी जाती है। इससे कभी एक तथा कभी दो मध्यम पात्रों के वार्तालाप से कथांश की सूचना दी जाती है। यह दो प्रकार का होता है–(1) शुद्ध विष्कम्भक, (2) संकीर्ण (मिश्र)[5] विष्कम्भक। एक या अधिक मध्यम श्रेणी के पात्रों वाला विष्कम्भक शुद्ध कहलाता है तथा मध्यम एवं अधम श्रेणी के पात्रों से प्रयुक्त विष्कम्भक 'संकीर्ण' कहा जाता है। ये दोनों प्रकार के विष्कम्भक अंक के आरम्भ में प्रयुक्त होते हैं, मध्य या अन्त में नहीं। यह प्रथम अंक के आरम्भ में तथा दो अंकों के बीच में भी रखा जा सकता है।

डॉ. कैलाशनाथ द्विवेदी के रूपक "नाट्यामृतम्" में "अलक्षेन्द्रविजयम्" नामक रूपक के तृतीय दृश्य के प्रारम्भ में ही एक पात्र पोरस के द्वारा सूचित किया जाता है कि यूनान का आतंकवादी सिकन्दर हमारी मातृभूमि पर आक्रमण करना चाहता है।[6] अतः यहाँ पर एक पात्र द्वारा आक्रमण करने की आशंका की सूचना दी जाती है। अतः यहाँ पर शुद्ध विष्कम्भक है।

प्रवेशक–प्रवेशक का शाब्दिक अर्थ है –सामाजिक के हृदय में अप्रत्यक्ष अर्थ का प्रवेश कराने वाला। अप्रत्यक्षान् अर्थात् "सामाजिकहृदये प्रवेशयतीति प्रवेशकः" विष्कम्भक की तरह इसमें भी अतीत एवं भावी वृत्तांशों की सूचना निम्न कोटि के पात्रों के द्वारा दी जाती है। प्रथम अंक के आरम्भ में इसकी योजना नितान्त वर्जित है। इसकी योजना हमेशा दो अंकों के बीच में ही की जाती है। इसकी भाषा संस्कृत भिन्न प्राकृत आदि होती है। परन्तु प्रवेशक में यदि ऋषि–मुनि, ब्राह्मण, कंचुकी तथा बिट जैसे पात्रों का प्रयोग किया गया हो तो वे प्राकृत में बोल सकते हैं।

भरतमुनि[8] ने प्रवेशक के 5 भेद किए हैं–

1. किसी प्रवेशक में गूढ़ आशय की व्याख्या की जाती है।
2. किसी में समय संकेत मिलता है।
3. किसी में कार्य विशेष के संरम्भ का बोध होता है।
4. किसी में कभी–कभी आधिकारिक इतिवृत्त के मुख्य अर्थ की प्राप्ति का संकेत मिलता है तथा
5. अग्रिम कथांश की सूचना मिलती है।

नाटकलक्षणरत्नकोश के अनुसार प्रवेशक का प्रयोग नाटक, प्रकरण, नाटिका तथा प्रकरणी में ही होना चाहिए।[9] नाट्यामृतम के 'प्रतिशोधः' नामक रूपक के षष्ठ दृश्य के अन्त में तथा सप्तम दृश्य के प्रारम्भ में सोनाली और शेफाली शत्रुओं से बदला लेने के लिए अपने गूढ़ (गोपनीय) संदेश को दूत के माध्यम से अरब देश के शासक अलहज्जाज के पास पहुँचाती हैं। अतः यहाँ पर 'प्रवेशक' नामक अर्थोपक्षेपक है।

चूलिका–जहाँ सूच्य कथांश की सूचना नेपथ्य के अन्दर स्थित पात्रों द्वारा दी जाए, वहाँ 'चूलिका' नामक अर्थोपक्षेपक होता है।[10] इसमें सूत, मागध, बन्दी

Scanned with CamScanner

आदि पात्र हो सकते हैं। इसका प्रयोग अंक के मध्य में भी हो सकता है तथा अन्य अर्थोपक्षेपकों में भी इसका स्थान सम्भव है। साहित्यदर्पण में चूलिका का लक्षण इस प्रकार है–अन्तर्जवनिकासंस्थैः सूचनार्थस्य चूलिका।

'नाट्यामृतम्' के 'विजेता कः' नामक रूपक में मूषिक साधुओं का वर्णन सैनिकों द्वारा नेपथ्य के अन्दर ही किया जाता है। अतः यहां पर सैनिकों द्वारा मूषिक मुनियों के वर्णन में चूलिका नामक अर्थोपक्षेपक है।

अंकावतार–अंकावतार वह अर्थोपक्षेपक है जिसमें प्रथम अंक की कथावस्तु का विच्छेद किए बिना दूसरे अंक की वस्तु आरम्भ की जाती है।[11] भरतमुनि के अनुसार इसमें समाप्यमान अंक एवं आरम्भ होने वाले अंक के बीच में कोई दूसरा दृश्य नहीं रहता। अंकावतार के पात्रों के बाद दूसरे अंक का आरम्भ हो जाता है।[12]

अंकास्य (अंकमुख)–अंकास्य वह अर्थोपक्षेपक है जहाँ एक ही अंक में दूसरे अंक की समस्त कथा के बीजार्थ (आरम्भ की) की संक्षिप्त सूचना दी जाती है।[13] धनंजय के अनुसार जहां एक अंक की परिसमाप्ति के समय उस अंक के प्रयुक्त पात्रों द्वारा अवशिष्ट अर्थ की सूचना दी जाए, वह अंकास्य कहलाता है।[14]

"नाट्यामृतम्" में "अलक्षेन्द्रविजयम्" नामक रूपक की समाप्ति पर "विजेता कः" नामक रूपक के बीजार्थ की संक्षिप्त सूचना बताई गई है। अतः यहाँ पर 'अंकास्य' नामक अर्थोपक्षेपक है।

इस प्रकार नाट्य में अर्थोपक्षेपक की महत्त्वपूर्ण भूमिका है, जिसमें नीरस कथावस्तु अपेक्षाकृत अधिक समय लेने वाली कथावस्तु की सूचना अर्थोपक्षेपक के माध्यम से दे सकते हैं। अर्थात् सूचना देनी तो अनिवार्य है। 'नाट्यामृतम्' में अर्थोपक्षेपक का संयोजन बड़ी कुशलता से किया गया है। यद्यपि 'नाट्यामृतम्' एकांकियों का आधुनिक नाट्य है तथापि नाटककार ने प्राचीन नाट्य–तत्त्वों को बखूबी व मनोरम रीति से समायोजित किया है। अतः 'नाट्यामृतम्' अर्थोपक्षेपकों की दृष्टि से संस्कृत–नाट्य–परम्परा में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

प्रो. अर्चना दुबे
श्रीसोमनाथसंस्कृत विश्वविद्यालय
वैरावल, जिला गीर, सोमनाथ,
गुजरात 362266 मोबाइल 09558879821
archanakumaridubey@gmail.com

सन्दर्भ–

1. नाट्यामृतम्, विजेता कः पृ. 64
2. साहित्यदर्पण–6/51
3. साहित्यदर्पण–6/54
4. वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः।
संक्षिप्तार्थस्तु विष्कम्भ आदावंकस्य दर्शितः।। साहित्यदर्पण 6/55

Scanned with CamScanner

5. मध्येन मध्यमाभ्यां वा पात्राभ्यां सम्प्रयोजितः।
शुद्धः स्यात्स तु संकीर्णो नीचमध्यकल्पितः।।–साहित्यदर्पण 6/56
6. नाट्यामृतम्, अलक्षेन्द्रविजयः, तृतीयदृश्य, पृ. 14
7. प्रवेशकोऽनुदात्तोक्त्या नीचपात्रप्रयोजितः।
अंकस्यान्तर्विजेयः शेषं विष्कम्भके यथा।।–साहित्यदर्पण, 6/57–58
8. नाट्यशास्त्र 20/35–35
9. नाटकलक्षणरत्नकोश, पृ. 32
10. अन्तर्जवनिकासंस्थैः सूचनार्थस्य चूलिका। साहित्यदर्पण, 6/58–59
11. अंकान्ते सूचितः पात्रैस्तदंकस्याविभागतः।
यत्रांकोऽवतरत्येषोऽङ्कावतार इति स्मृतः।। साहित्यदर्पण, 6/59–60
12. नाट्यशास्त्र 10/110
13. यत्र स्यादङ्क एकस्मिन्नङ्कानां सूचनाखिला।
तदङ्कमुखमित्याहुर्बीजार्थख्यापकं च तत्–साहित्यदर्पण, 6/59–60
14. अङ्कान्तपात्रैर्वाङ्कास्य छिन्नाङ्कस्यार्थसूचनात्।। साहित्यदर्पण 6/60–61

Scanned with CamScanner